International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-08-2022, Accepted: 28-08-2022, Published: 14-09-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 4-6

राजेन्द्र यादव की कहानी 'खानदानी घर' का मूल्यांकन

विपिन कुमार
शोधार्थी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, भारत

सारांश
राजेंद्र यादव इस कहानी के माध्यम से स्त्री जीवन के यथार्थ को चित्रित करते हैं. इस कहानी से वे उन बड़े और खानदानी घरों की भी पोल खोलते दिखाई पड़ते हैं जो तथाकथित सभ्य समाज में अपने को बड़ा इज्जतदार और सम्मानीय कहते हैं पर वास्तविक सच्चाई कुछ और ही ही. आज भी बड़े और खानदानी घरों में दीवारों और प्रदों के पीछे बहू–बेटियों के ऊपर इतना अत्याचार किया जाता है कि या तो वह इस जलालत भरी जिंदगी को अपनी नियति मानकर इसमें रहना पसंद करती हैं या फिर मरना.जो वास्तव में गलत है. पर अब हमारा समाज बदल रहा है अब हमारी बहु–बेटियां इस तरह की चीजों का विरोध कर रही हैं बल्कि आगे बढ़कर अपने अधिकारों और अपनी अश्मिता की लड़ाई स्वयं लड़ भी रही हैं.

मूल शब्दः स्त्री, कहानी, खानदानी, ननद, भाई, प्रताड़ित आदि

प्रस्तावना

नयी कहानी आंदोलन के प्रमुख त्रयी कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव में हमारी इस कहानी के कहानीकार हैं, राजेंद्र यादव जिन्होंने स्त्री और दलित विमर्श को हिन्दी कथा साहित्य की मुख्य धारा में लाने का सराहनीय कार्य किया. हिन्दी साहित्य से संबंधित निकलने वाली पत्रिकायों में से एक 'हंस' के सम्पादक राजेंद्र जी ने पहली बार स्त्रियों एवं दलितों के जीवन की व्यथा–कथा को इस पत्रिका के माध्यम से सबके सामने लेकर आये बल्कि उन्होंने इन दोनों विषयों पर विशेषांक भी निकाले.ये अलग बात है कि इसी वजह से वे विवादों के केंद्र में भी रहे. राजेंद्र यादव के संबंध में मैनेजर पाण्डेय का कथन है कि– "उन्होंने स्त्री दृष्टि और लेखन को बढ़ावा दिया. स्त्री दृष्टि पर उनकी राय विवादास्पद लेकिन विचारणीय रही."

दिनेश कुशवाह जी का भी राजेंद्र के विषय में कहना है कि– " उन्होंने हिन्दी साहित्य में दलितों और स्त्रियों के लिए वैसे ही जगह बनाई जैसे हमारी धरती पर बुद्ध ने पहली बार वंचितों के लिए करुणा की हाँक लगाई थी." राजेंद्र यादव अपनी कहानिओं में पारिवारिक संबंधों को बड़ी ही सहजता और यथार्थ के साथ चित्रित करते हैं. वे अपनी कहानियों में स्त्री मन की पीड़ा के साथ–साथ उनके जीवन हो रहे परिवर्तनों को बड़ी मार्मिकता के साथ व्यक्त करते हैं. स्त्री जीवन की इसी पीड़ा और दर्द का विश्लेषण एवं मूल्यांकन का प्रयास राजेंद्र यादव की कहानी 'खानदानी घर' के माध्यम से मैंने अपनी अल्पबुद्धि और ज्ञान से करने का प्रयत्न किया है.

राजेंद्र यादव की कहानी 'खानदानी घर' उन बड़े और खानदानी घरों की वास्तविक सच्चाई की कलई खोलकर रख देती है, जहाँ कहने को तो लोग रहीस और बड़े घर के हैं पर ह्रदय के बड़े ही छोटे और मानसिक रूप से अपंग हैं. इस कहानी की शुरुआत ही कुछ इस तरह से है कि– "इच्छा हो रही है, धाड़ मार–मारकर, गला फाड़–फाड़कर रो उठूं. छाती फाड़कर इतनी जोर से चीखूँ कि यह पुराना मकान कोलाहल से भरकर फट जाए. पर लाख प्रयत्न करने पर भी कंठ से सिसकियाँ ही नहीं निकल पा रही हैं. मेरे होंठ काँप–काँपकर ऐंठ जाते हैं, एक शब्द भी मुँह से नहीं निकल पा रहा, मानो किसी ने मशक में खूब पानी भरकर ऊपर से कस दिया हो– अंदर वह पानी खौल रहा है, उबल रहा है." इस संदर्भ से यह जाहिर हो जाता है कि एक स्त्री कितनी पीड़ा में है पर चाह कर भी वह अपने इस नारकीय जीवन के लिए कुछ नहीं कर पा रही है. यह वास्तव में स्त्री का जीवन है, आज भी ये स्थिति बड़े और खानदानी घरों की है, जहाँ स्त्रियों पर चारदीवारी के अंदर ना जाने कितने सितम किये जाते हैं.

कहानी में थोड़ा और आगे बढ़ने पर ज्ञात होता है कि उसका पति भी अपनी बहन का साथ उसके अत्याचारों में देता है, वह भी उसको तरह–तरह के कष्ट पहुंचाने वाले हथ कंडो को अपनाता है जैसे–"मेरी खुली हथेलियाँ एक–दूसरी के ऊपर रखी हुई हैं और उन पर उस बड़े भारी खानदानी पलंग का पाया रखा हुआ है. पलंग पर सफ़ेद चादर ओढ़े बिलकुल निश्चिंत वह खराटें मार रहा है, जैसे कोई नयी घटना नहीं है. मैं खूब चीखकर कहना चाहती हूं–वह मेरा पति है!" क्या आप यह कल्पना कर सकते हैं कि उस स्त्री की स्थिति उस घर में क्या होगी, जहाँ वह घर में पति की बहन के द्वारा हर तरह से प्रताड़ित की ही जाती है, वह जो कम थी की उसका पति भी उसे चोट पहुंचाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ता.

कहानी में राजेंद्र जी दर्शाते हैं कि कैसे एक स्त्री ही एक स्त्री का जीना हराम कर देती है. इस कहानी में एक स्त्री एक स्त्री को किस हद तक प्रताड़ित कर रही है उसका रेखांकन राजेंद्र जी ने कुछ इस तरह से किया है–"घर में उनकी बहन 'डिक्टेटर' है३. जीजी (ननद) बड़ी जिठानी से रूठी हुई हैं३. बीस आदमियों के इस कुटुंब में रोटी उन्हें ही बनानी पड़ती है–दोनों समय की. उनका अपराध केवल यह था कि बेचारी सुबह से दो बजे तक भूखी नहीं रह सकीं– दो आने की जलेबी मंगा ली थी. जलेबी फेंकर उनकी पीठ पर दाँत भींचकर जो घूँसा पड़ा था, उसे उनकी रीढ़ की हड्डी न जाने कितने दिन याद रखेगी! घर का नियम है कि सुबह जब तक सब पुरुष न खालें, स्त्री एक कौर मुँह में नहीं दे सकतीं, और पुरुष हैं कि कोई एक बजे आता है, कोई ढाई बजे. चूल्हे के सामने बैठे–बैठे भूख की आग पेट में कैसी लहका करती है, इसे हम ही जानती हैं. रात को एक बज जाता है, लेकिन मुँह से एक शब्द नहीं निकाल सकतीं– बड़े घर की बहुएं हैं न." आज भी बड़े घरों में क्या छोटी जगहों प्रणाम भी महिलाओं के साथ इस तरह के नियम की उम्मीद की जाती है. सारे नियम और कायदे सिर्फ महिलाओं के लिए बने हैं. पुरुषों के लिए कोई नियम कायदे क्यों नहीं.

कहानी में उसकी ननद बताती है कि स्वयं अपने जुल्मों की दस्ता बताते हुए कहती है कि कैसे उसने अपने भाई की पहली पत्नी की जान ले ली थी जबकि वह गर्भवती थी. "जो कोई मेरे

खिलाफ जाता है, उसकी खैर नहीं है.' फिर वे रस ले–लेकर पहली बहू के विषय में बताती हैं कि उसे हाथ–पाँव बांधकर उसके ऊपर मार पड़ी थी– मोटे–मोटे रस्सों से! और जब पिटते–पिटते बेचारी बेहोश हो गयी तो डोल भरकर उसके ऊपर पानी डाला गया था! तनिक कराही, उसे चेत हुआ तो फिर वही क्रम! और इस प्रकार तीन घण्टे की मार में ही उस बेचारी गर्भवती ने प्राण छोड़ दिए थे." इस कहानी के इस वाकए से उस अमानवीयता का पता चलता है कि कैसे लोग इतने निष्ठुर और संवेदनहीन हो सकते हैं कि एक छोटी से बात के लिए एक गर्भवती की जान लेने से भी नहीं चूकते. ये हमारे समाज की सच्चाई जहाँ बड़े और खानदानी घरों में महिलाओं के साथ में शोषण कि सारी हदें पार कर दी जाती हैं.

इसी बात को आगे बढ़ाते हुए राजेंद्र जी लिखते हैं कि– आज बीसवीं शताब्दी में ये सब बातें होती हैं. उसकी सूरत देखते ही मेरे प्राण सूख जाते हैं. बहू का अपराध था कि घर से भाई आया हुआ था. पुरुषों के कमरे की ओर ठहरा था! पहले उसने जेठानी की छोटी बच्ची से पूछवा लिया– कमरे में केवल उसका भाई है. वह बात करने चली गयी– बस! बड़े घर की बहुएँ पुरुषों के कमरे में चली जाएं? इससे बड़ा पाप शायद इस खानदानी घर में कभी नहीं हुआ." ये कैसा खानदानी घर है जहाँ अपने भाई से मिलने नहीं दिया जाता और उसकी जान मात्र इस बात के लिए ले ली जाती है.

राजेंद्र जी की इस कहानी में उसकी ननद की चलाकियों या कहिये समाज के लोगों के सामने अच्छा बनने और घर के अंदर बहूओं का मानसिक और शारीरिक शोषण करना और लोगों के सामने अच्छा बनने का ढोंग करना. उसके इस कथन से इस बात की पुष्टि हो जाती है–"सिर्फ यही धोती मेरे पास है, इसी को आधा धो लेती हूं–सुखा देती हूं, आधी पहनती हूं–सिर्फ इसलिए कि मैंने पत्र बिना पूछे डाल दिया अपने घर. इसीलिए यह अपमान प्रताड़ना? कोई मिलने आता है तो कमबख्त खुटियों पर कपड़े टांग देती है. उससे कहती है, 'घर में कपड़े तो निरे टंगे हैं, बहू ही फुहड़िया है, पहनना ही नहीं जानती." यह संदर्भ उस स्त्री के जुल्म और उसके सितम के साथ–साथ उसकी होशियारी और चालाकी को भी दर्शाता है.

कहानी में एक प्रसंग आया है कि यदि उस स्त्री से आपने कुछ भी ऐसा कहा जो उसको पसंद नहीं तो फिर आप को उसके विकराल रूप का सामना करना पड़ सकता है. उसी विषय से संबंधित एक वाकया इस कहानी में आया है, जो कुछ इस प्रकार से है–"उस दिन खाना–खाते समय–पास ही सुराही में पानी रखा था–माँगा,'पानी दो!' मेरे हाथ चूल्हा पोतने के हो रहे थे, कह दिया–'जीजी, जरा उंडेल लो,' बस, इसी पर सुराही मेरे सिर पर उठाकर मारी– इतने जोर से कि आज भी सिर छूने से दर्द होता है–बाल नहीं काढ़ती. और रात को जब दूध लेकर गयी, तो इस अंधे (पति) ने इतनी जोर से ठोकर मारी थी कि मैं दस सीढ़ियां लुढ़कती हुई औन्धी– सीधी गिरी–रात भर सोती रही! कोई सुनने वाला नहीं था." इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह अपने घर में अपनी ननद से तो प्रताड़ित है ही लेकिन जो उसके साथ सात वचन लेकर उसके सुख–दुःख में साथ रहने का वचन लेकर इस घर में उसको लेकर आया था वह भी उसकी जान का दुश्मन बन बैठा है वह भी उसको प्रताड़ित करने में अपनी बहन से किसी भी मामले में कम नहीं है. ऐसी विकट परिस्थिति में एक निर्बल और असहाय स्त्री करे तो क्या करे?

कहानी में एक स्थल पर जब वह स्त्री पड़ोस में रहने वाली स्त्री जो पंजाब के दंगो में अपना सब–कुछ लुटा कर आयी हुई महिला से बात कर रही होती है तो उसकी ननद उस स्त्री के लिए अपशब्द कहती और अपनी भाभी को भी खरी–खोटी सुनाती है–"क्या कर रही है, उस रंडी के साथ भागेगी? निकल जा उसके साथ भीख मांगने!' क्या–क्या कथनीय और अकथनीय नहीं कहा गया! मैंने धीमे से जेठानी से कहा–जीजी में दया नहीं है." उसके बाद जो उसने अपने भाई से जो आग लगायी है, उसके बाद उसने जो मेरा क्या हश्र किया है–"हाथ यहाँ, रख, रखती है या नहीं! क्या कह रहा हूं, सुन रही है? और मेरे दोनों हाथों पर इस खानदानी भारी पलंग का पाया रखकर सो गया. रोते–रोते मैं बेदम हो गयी हूँ. बाहर सूनी रात सायं–सायं कर रही है. कभी–कभी चौकीदार की आवाज सुनाई दे जाती है." इस तरह इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि बड़े और खानदानी घरों में बहू–बेटियों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है. हद दर्जे की अमानवीयता है जहाँ थोड़ी सी बात के लिए इस तरह का व्यवहार बहूओं के साथ किया जाता है.

इस कहानी में जब उसके पति द्वारा भी उसको प्रताड़ित किया जाता है तो वह कहती है दृ"औरों की सांसें तंग करती हैं, ननद तंग करती हैं, तो उन्हें एक सहारा रहता है, उन्हें एक आधार रहता है, एक जगह रहती है, जहाँ वह अपना सुख–दुःख कह सकती हैं, सांत्वना पा सकती हैं, प्यार ले सकती हैं! पर यहाँ तो यह मूर्ख, मिट्टी का पुतला है–मैं इसका आदर नहीं कर सकती, इससे प्रेम नहीं कर सकती! यह कायर नपुंसक!" इस तरह एक स्त्री के लिए विवाह के बाद उसके अपने घर वालों के बाद उस व्यक्ति कि जिम्मेदारी बनती कि उसकी खुशी या गम का ख्याल उसका पति ही रखता है, वह भी अपना सुख और दुःख वह अपने पति से ही कहती पर यहाँ इस कहानी में में उसका पति अपनी बहन के साथ मिलकर उसे प्रताड़ित करने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ता है, अब उस स्त्री के जीवन की कल्पना कीजिये जहाँ उसकी एकमात्र उम्मीद उसका पति भी उसकी सुध नहीं लेता?

राजेंद्र जी इस कहानी के लगभग अंत में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात को उठाते हैं जो एक स्त्री के जीवन के लिए बहुत जरूरी है उसका आर्थिक रूप से सक्षम और पढ़ा लिखा होना जो इस कहानी की नायिका महसूस भी करती है–"लेकिन करूंगी क्या? पढ़ी–लिखी भी तो नहीं हूं." इस कथन से ज्ञात हो जाता है कि समाज में आर्थिक रूप से सक्षम और पढ़ा लिखा होना बहुत जरूरी है वरना इस कहानी की नायिका की तरह या तो वह इस जलालत भरी जिंदगी को जीने के लिए अभिसप्त है या फिर आत्महत्या जैसे गलत कदम उठाने के लिए विवश.

इस तरह से राजेंद्र यादव इस कहानी के माध्यम से स्त्री जीवन के यथार्थ को चित्रित करते हैं. इस कहानी से वे उन बड़े और खानदानी घरों की भी पोल खोलते दिखाई पड़ते हैं जो तथाकथित सभ्य समाज में अपने को बड़ा इज्जतदार और सम्मानीय कहते हैं पर वास्तविक सच्चाई कुछ और ही ही. आज भी बड़े और खानदानी घरों में दीवारों और प्रदों के पीछे बहू–बेटियों के ऊपर इतना अत्याचार किया जाता है कि या तो वह इस जलालत भरी जिंदगी को अपनी नियति मानकर इसमें रहना पसंद करती हैं या फिर मरना.जो वास्तव में गलत है. पर अब हमारा समाज बदल रहा है अब हमारी बहु–बेटियां इस तरह की चीजों का विरोध कर रही हैं बल्कि आगे बढ़कर अपने अधिकारों और अपनी अश्मिता की लड़ाई स्वयं लड़ भी रही हैं.

संदर्भ सूची

1. मैनेजर पाण्डेय से बी बी सी संवाददाता अजय शर्मा की बातचीत पर आधारित
2. Www-Hindisamay-com दिनेश कुशवाह का लेख–राजेंद्र यादवरू हम जा मिले खुदा से दिलवर बदल बदल के
3. अर्चना वर्मा, बलवंत कौर (संपा.), कहानी–खानदानी घर, राजेंद्र यादव रचनावली (खण्ड –6, कहानीरू 1), पृष्ठ–280, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015
4. उपरोक्त

5. अर्चना वर्मा, बलवंत कौर (संपा.), कहानी–खानदानी घर, राजेंद्र यादव रचनावली (खण्ड –6, कहानीरू 1), पृष्ठ–281, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015
6. वही, पृष्ठ–282
7. उपरोक्त
8. अर्चना वर्मा, बलवंत कौर (संपा.), कहानी–खानदानी घर, राजेंद्र यादव रचनावली (खण्ड –6, कहानीरू 1), पृष्ठ–282, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015
9. उपरोक्त
10. अर्चना वर्मा, बलवंत कौर (संपा.), कहानी–खानदानी घर, राजेंद्र यादव रचनावली (खण्ड –6, कहानीरू 1), पृष्ठ–283, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015
11. उपरोक्त
12. अर्चना वर्मा, बलवंत कौर (संपा.), कहानी–खानदानी घर, राजेंद्र यादव रचनावली (खण्ड –6, कहानीरू 1), पृष्ठ–284, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015
13. उपरोक्त